RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 27 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 11 दिसम्बर 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

पड़मपेच में फंसे हल्द्वानी में कौतिक की गाथा और प्रश्न

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड के बड़े शहरों में शामिल हो चुके हल्द्वानी की पड़मपेच से आम जनता दु:खी हो चुकी है। मुख्य मार्गों से लेकर गलीकूचों तक में वाहनों की कतरार और ढेले-टब्बड़ों की भरमार से पैदल चलना भी दूभर होता जा रहा है। कहने को कई प्लान शहर के लिये बन चुके हैं और फ्लाईओवर से लेकर सड़क पार करने को विशेष व्यवस्था होनी है लेकिन शहर का हाल जैसा दिखाई दे रहा है, इसे देख अभी तो यही लग रहा है जिसकी लाठी उसकी भैंस। जब जो चाहे जलसा-जुलूस दिखाई देता है।

वीआईपी ड्यूटी में व्यस्त पुलिस करे भी तो क्या करे, ऊपर से दबंगों की आड़ में फुटपाथ घेरकर बैठने वालों और फुटपाथ पर पक्का निर्माण करने वालों का कोई कुछ नहीं कर सकता है। इन सबके ऊपर

कौतिकों का मायाजाल इतना फैल चुका है कि देश के तमाम त्यौहारों सहित कई प्रकार के उत्साह मनाने के लिये कुछ विशेष भीड़ हर समय तैयार है। इसके अलावा सरकार अमला भी चाहता है कि बड़े शहर में बड़ा हो। इसके लिये नया कर दिखाने की होड़ मची है। विगत दिवस 'ईजा बैंणी महोत्सव' का आयोजन भी इस गिनती में है। इस सरकारी आयोजन को भव्य बनाने के लिये शासन-प्रशासन ने कोई कसर नहीं छोड़ी। महोत्सव के कारण ही शहर का रूट प्लान बना दिया गया और स्कूलों का कार्यक्रम तय हो गया। सरकार और भाजपा कौतिक की गाथा गाने लगे जबकि कांग्रेस सहित विपक्ष ने इस प्रकार के आयोजनों पर प्रश्न खड़े किये। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने विभिन्न विकास योजनाओं का लाकार्पण और शिलान्यास करने के साथ ही इसे मील का पत्थर बताया। कहा यह नारी शक्ति को प्रदर्शित करने वाला आयोजन है। कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता दीपक बल्यूटिया ने कहा जिस आयोजन से 'ईजा' परेशान हो जाए वह कैसा सम्मान है। पूरा शहर वीआईपी कल्चर और जाम से थक चुका है। हाल-फिलहाल ईजा-बैंणी कौतिक सबसे ज्यादा चर्चा में है।

पुरातन जोहारी शौका समाज में बोखल व ज्वखल की महत्ता

जगदीश वृजवाल

जोहारी शौकाओं के सांस्कृतिक जीवन, आर्थिक स्थिति, धार्मिक मान्यताएं राजनीतिक परिस्थिति जिसकी विशिष्टता वह विशेषता उन्हें अलग पहचान देती है।

अर्द्ध यायावरी जीवन निर्वहन करने वाले मध्य हिमालय के पशुचारक शक या शौका आयुधजीबी (सैनिकों सा जीवन जीने वाले) जो शीत प्रधान क्षेत्रों में रहना ही पसन्द करते थे। 0 सेंटीग्रेड तापमान या ऋणात्मक तापमान क्षेत्र भी इनका पंसदीदा निवास स्थान ही रहा है। हल्दुआ-पिंगलुवा लोगों का बर्ष भर जोहार में ही निवास करना, या मंछू रावत के कटक द्वारा गेरती गमन पर छ: वर्ष तक टोपी ढुंगा के पास मलारी गढ़वाल जाने वाले रास्ते में वर्ष भर निवास करना क्या सिद्ध करता है? प्रमाण भी देता है कि भौगोलिक परिस्थिति के अनुरूप शौकाओ की रीति-रिवाज, वेशभूषा खान-पान, रहन-सहन तय हुआ है तथा स्वयं ये वर्ग अविष्कारक के भूमिका में भी रहे होंगे।

जोहारी शौकाओं के पुरूष परिधान सिर पर पगड़ी, ऊनी कोट, सूती कुर्ता, ऊनी चुड़ीदार पायजामा जो परम्परागत परिधान हैं। ऊनी कोट के दो प्रकार- बोखला भी विशेष अंग वस्त्र है, जो ऊपरी अंग में पहना जाता था। वक्षस्थल का एक भाग कुछ लम्बा जो बाई तरफ अन्दर के तरफ दबाकर बाई भाग दायने पल्ले से ऊपर ढक दिया जाता है। पतली रस्सी नुमा ऊनी तागे से कमरबन्द या पाखरा (लगभग एक या डेढ़ मीटर कपड़ा कमर में बांधने वाला) कमर में लपेटा जाता है। कुछ बोखला आधुनिक कोट नुमा भी होता है दोनों के बनावट में कुछ अन्तर अवश्य है आधुनिक कोट नुमा बोखल की मोटाई लगभग 1 इंच से 2 इंच तक भी हो सकती है इसकी लम्बाई सिर्फ कमर से नीचे तक ही रहती है। जिससे हर कार्य करने में आसानी रहे।

पहले बनावट बोखल मोटे बाल वाले भेड़ों के बालों से निर्मित की जाती है जिसे घरिऊन (कठोर बाल वाले भेड़ के ऊन) भी कहते है इसे अति मशक्कत के बाद तैयार किया जाता है।

दूसरी बनावट बोखल को मुलायम भेड़ के उन द्वारा तैयार किया जाता है जिस भेड़ को जोहारी बोली मैं खुन्नू भेड़ कहते है। जिसे बिशेष अवसरों पर ही पहनने का रिवाज होगा।

आज यह परिधान धारचूला के रं समाज में बहु प्रचलित है आधुनिक जोहारियों के आगमन से पूर्व घुटने तक बोखल का प्रचलन जोहार घाटी में अवश्य होगा, पूर्व में जोहार, दारमा, चौंदास की संस्कृति सभ्यता में एकरूपता थी, जनजाति, बोन, बौद्ध धर्म के प्रभाव से प्रभावित थे। सोंवलि, दुर्रि, मिलम में गोम्फा निर्माण, जो शौकाओ की ही परम्परा थी। जिस कारण बोखल परिधान को भी अलग नहीं कर सकते हैं यह जोहारी शौकाओं का मुख्य भी अंग वस्त्र रहा होगा।

बोखल की बिशेषता यह इतनी मजबूत व मोटाई लिए रहता है कि इसे सुरक्षा कवच कहें तो अतिशयोक्ति नहीं कहा जायेगा। इसके अन्दर बारिश, हवा, ठण्ड शरीर को क्षति पहुँचने का कोई भी खतरा कम रहता है।

आधुनिक शौका जो कार्य करते समय ऊनी कोट नुमा बोखल को अधिक पहनते होगें, जो आज तक बना है। मुलायम ऊन से बने कोट को विशेष उत्सवों में ही पहना करते होगें। शौका व्यापार के चलते सदैव यायावरी जीवन में अपने पशुओं के साथ खुले आसमान पर अधिक समय गुजारते थे। किसी मैदान में तम्बू

शेष पृष्ठ 2 पर

सिलक्यारा : उत्तराखण्ड को संदेश और सबक

डॉ. हरीश चन्द्र अण्डोला

आपरेशन सिलक्यारा की सफलता के बाद केन्द्र और राज्य सरकार ने राहत की सांस ली है। लेकिन सिलक्यारा सुरंग में 17 दिन तक फंसी 41 जिंदगियों को बचाने का यह अभियान दोनों सरकारों को सबक भी सिखा गया है। विशेष रूप से आपदाओं का अक्सर सामना करने वाले उत्तराखण्ड राज्य के लिए यह घटना कायदे से सबक सीखने वाली है। इस घटना ने बताया कि हमें भी सुरंगों के निर्माण के विशेषज्ञ अर्नोल्ड डिक्स और माइनर सुरंग एक्सपर्ट क्रिस कूपर सरीखे विशेषज्ञ तैयार करने होंगे। उत्तराखण्ड सरकार देश का पहला आपदा प्रबंधन मंत्रलय खोलने का श्रेय तो लेती है, लेकिन कई वर्ष बाद भी विशेषज्ञता, तकनीक और दक्ष मानव संसाधन के मामले में उतनी प्रगति नहीं हो पाई है। इस हादसे ने राज्य के आपदा प्रबन्धन विभाग की तैयारियों की कलई भी खोली है। हादसे के बाद आपदा प्रबन्धन विभाग इस पूरे अभियान में एक सहयोगी की भूमिका से आगे नहीं बढ़ पाया। केन्द्र और उसकी एजेंसियों को ही मोर्चा सम्भालना पड़ा। नया राज्य होने के कारण अभी उत्तराखण्ड में हजारों करोड़ रुपये की परियोजनाओं का निर्माण होना हैं। इनमें कई रोपवे, सुरंगों का निर्माण प्रस्तावित हैं। ऐसे में सिलक्यारा सरीखी घटनाओं का खतरा हमेशा बना रहेगा। लेकिन क्या उन घटनाओं से निपटने के लिए उत्तराखण्ड सरकार और आपदा प्रबन्धन विभाग उस हद तक तैयार है। जानकारों का मानना है कि सिलक्यारा सुरंग हादसे से सबक लेते हुए उत्तराखण्ड सीखने और सिखाने का ऐसा वातावरण तैयार कर सकता है कि राज्य में ही अर्नाल्ड डिक्स और क्रिस कूपर सरीखे विशेषज्ञ उपलब्ध हों। अर्नोल्ड डिक्स आस्ट्रेलियन हैं। उन्हें भूमिगत सुरंगों और परिवहन बुनियादी ढांचे का विशेषज्ञ माना जाता है। भूमिगत काम करने में क्या दिक्कतें आ सकती हैं, खतरे क्या हैं, उनसे कैसे बचा जाए, ये सारी सलाह अर्नोल्ड डिक्स प्रोजेक्ट से जुड़े लोगों को देते हैं। वह पूरी दुनिया में भूमिगत सुरंग बनाने के विशेषज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। तीन दशकों के उनके करियर में इंजीनियरिंग, भूविज्ञान, कानून और रिस्क मैनेजमेंट मामलों का एक अनूठा मिश्रण देखा गया है। वह सभी महाद्वीपों के लिए काम करते हैं। इसके साथ ही डिक्स अंडरग्राउण्ड वर्क्स चौंबर्स, विक्टोरियन बार, ब्रिटिश इंस्टीट्यूट ऑफ इन्वेस्टिगेटर्स के सदस्य हैं और टोक्यो सिटी यूनिवर्सिटी में इंजीनियरिंग (सुरंगों) में विजिटिंग प्रोफेसर भी हैं। केन्द्र सरकार के अनुरोध पर उन्हें आपरेशन सिलक्यारा के लिए विशेष रूप से बुलाया गया। इस बचाव अभियान में दुनियाभर के जानकारों, और तकनीक का सहारा लिया गया। विदेशों से जानकार और मशीने मंगवाई गईं। NDRF, SDRF, स्थानीय पुलिस, ग्रामीणों और सेना के जवानों की कड़ी मेहनत ने इन मजदूरों की जान बचाई। अगर यूं कहें कि इन श्रमिकों को नया जीवन मिला है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्रोफेसर डिक्स को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जो दुनिया भर में सुरंग सुरक्षा में उनके महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाता है। उत्तरकाशी के सिलक्यारा में टनल में फंसे मजदूरों को बाहर निकालने में आज 16 दिन के संघर्ष के बाद कामयाबी हाथ लगी है। जल्द ही रैंप तैयार होने के बाद मजदूरों को सुरंग से बाहर निकाल लिया जाएगा। इन्हें निकालने में रैट माइनर्स ने अहम भूमिका निभाई है। आगर मशीन के खराब होने के बाद रैट माइनर्स ने मजदूरों को सुंरग खोदकर बाहर निकालने में बेहद ही अहम भूमिका निभाई है। अत्याधुनिक सुरंगों और सुरंग प्रणालियों की डिलीवरी और रखरखाव के माध्यम से हमारे समुदायों के विकास का समर्थन करना।हमारी आधुनिक दुनिया को समर्थन देने के लिए आवश्यक परिवहन बुनियादी ढांचे की निरन्तर डिलीवरी और रखरखाव में सुरंगें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। समुदायों को जोड़ने के साथ-साथ, हमारी सड़क और रेल सुरंगें लोगों और माल ढुलाई को हमारे सड़क और परिवहन नेटवर्क में अ कि स्वतंत्र रूप से स्थानांतरित करने की अनुमति देकर चल रही जनसंख्या वृद्धि का समर्थन करने के लिए महत्वपूर्ण लिंक प्रदान करती हैं। टनलिंग अक्सर महत्वपूर्ण इंजीनियरिंग चुनौतियों का सामना करती है जिसके लिए उपयोगी परियोजना परिणाम प्राप्त करने के लिए व्यावहारिक ज्ञान, तकनीकी कौशल और प्रतिबद्धता की

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

लोकसभा चुनाव के लिये.....

उत्तराखण्ड के निकाय चुनाव बाद में होना स्पष्ट होते ही नेता-टोली लोक सभा चुनाव के लिये जुट गई है। प्रदेश में लोकसभा की पाँच सीटें हैं लेकिन जितना गणित इस बार लगाया जा रहा है वह मोदी और विपक्ष के एकता के बीच बनता जा रहा है।

उत्तराखण्ड के चुनाव गणित में अभी तक भाजपा झण्डा आगे नरेन्द्र मोदी के नाम पर आगे चल रहा है। मोदी के चेहरे पर ही आम जनता को अपनी ओर तराशने का काम पार्टी संगठन कर रहा है। विपक्ष का पूरा दबदबा जनवरी माह में दिखाई देने लगेगा क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी एकता का जितना डंका बज रहा है उसमें कांग्रेस ही बड़ी पार्टी है। उत्तराखण्ड की दो सीटों पर विपक्षी एकता दबदबा बना सकती है।

चुनाव के दौरान माहौल क्या होगा यह तभी पता चलेगा लेकिन अभी से माहौल बनाने के लिये नेताओं की दौड़, पार्टी के करतब दिखाई दे रहे हैं।

उत्तराखण्ड की तीन हवाई पट्टियां वायुसेना कब्जे में लेगी

नई दिल्ली। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएम) अनिल चौहान के अनुसार वायु सेना उत्तराखण्ड की तीन हवाई पट्टियों को अपने कब्जे में लेगी। वायु सेना के इस कदम से जहाँ सीमा पर चीन की चुनौती से निपटने में मदद मिलेगी, वहीं राज्य में प्राकृतिक आपदाओं से दूसरी जरूरतों के वक्त कनेक्टिविटी में मदद मिलेगी। रक्षा बलों के लिए रणनीतिक उपयोग और स्थानीय लोगों की मदद के लिए इन पट्टियों का विस्तार किया जाएगा। सीमावर्ती पहाड़ी राज्यों में अन्तिम इलाकों में लोगों की मदद के लिए सशस्त्र बलों की ओर से उठाए गए कदमों की चर्चा करते हुए श्री चौहान ने कहा कि आपरेशन सद्भावना के तहत सिक्किम, अरुणांचल प्रदेश, लद्दाख में सभी रक्षा बल सहकारी समितियों से दूध और ताजा भोजन खरीद रहे हैं। सहकारी समितियों से सामग्रियों की खरीद पर जोर देते हुए सीडीएस ने कहा कि इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिलता है। हालांकि उत्तराखण्ड व हिमांचल में अभी ऐसा नहीं किया गया है।

देश-विदेश एक झलक

भारत खरीदेगा ९७तेजस लड़ाकू विमान

भारत ने सशस्त्र बलों की समग्र लड़ाकू क्षमता को बढ़ावा देने के लिये 97 तेजस हल्के लड़ाकू विमानों और लगभग 150 प्रचण्ड हेलीकॉप्टर की अतिरिक्त खेप को खरीद के लिए मंजूरी दी। बताया जाता है कि इसमें करीब सवा दो करोड़ रुपये खर्च होंगे।

मलेशिया देगा भारतीयों को मुफ्त वीजा

मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम ने एक दिसम्बर से भारतीय एवं चीनी नागरिकों को 30 दिन का वीजा मुफ्त प्रवेश दिये जाने की घोषणा की है। थाइलैंड और श्रीलंका ने भी पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए हालिया में इसी प्रकार की घोषणा की थी।

खालिस्तानी आतंकी डल्ला के शूटर गिरफ्तार

पूर्वी दिल्ली के मयूर विहार इलाके से आधी रात खालिस्तानी आतंकी अर्शदीप सिह उर्फ अर्स डल्ला के दो शूटरों को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया गाय। पुलिस के अनुसार टीम को खबर मिली थी कि गैंगस्टर से आतंकी बने खालिस्तान टाइगर फोर्स के अर्शदीप के दो शूटर आने वाले हैं।

किसानों पर २१ लाख करोड़ का कर्ज

देश के किसानों पर व्यावसायिक, सहकारी और क्षेत्रीय बैंकों का करीब 21 लाख करोड़ रुपये का कर्ज बकाया है। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के आंकड़े बता रहे हैं कि देशभर में करीब 15.5 करोड़ खाताधारकों के औसतन 1.35 लाख रुपये प्रति खाताधारक बकाया है।

मणिपुर उग्रवादी समूह ने किया समझौता

मणिपुर में सक्रिय उग्रवादी समूह यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट ने सरकार के साथ शान्ति समझौते पर हस्ताक्षर कर हिंसा त्यागने की सहमति जताई है। गृह मंत्री अमित शाह ने एक्स पर पोस्ट कर इसे ऐतिहासिक उपलब्धि बताया।

पूर्वपीएम ओली ने उठाया कालापानी का मामला

नेपाल के पूर्व पीएम के.पी.शर्मा ओली ने भारत सीमा से लगे नेपाल के बैतड़ी जिले के जुलाघाट में 7 मीटर ऊँचा और 25 फीट व्यास का नेपाल का राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए आमसभा में लिपुलेख, लिपियाधुरा और कालापानी का मामला उठाया। कहा यह नेपाल के हिस्से हैं।

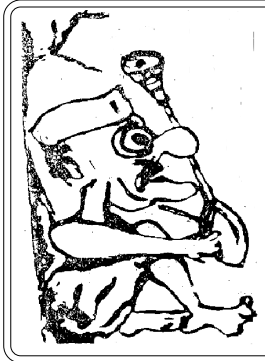

फसक

दाज्यू, जीतने वाले को कन्धे में उठाने वाले ठैरे

परिणाम निकलने के बाद अभूतपूर्व ही बताये जाते हैं बल

दाज्यू, उत्तरकाशी के सिलक्यारा में 41 श्रमिकों की जान बचने के बाद मोहल्ले में पटाखे फोड़े गये। आवाज बहुत आ रही थी लेकिन हम चुप रहे क्योंकि 398 घण्टे टनल में कैद रहे लोगों को निकलने की खुशी थी। दाज्यू, जगह-जगह से फोटो आने लगी, सुरंग से आने वालों का फूलमालाओं से स्वागत हो रहा था।

दाज्यू, जीतने वाले को कन्धे में उठाने वाले ठैरे। कितनी बीती वह तो टनल में फंसे लोग ही बता सकते हैं। परिणाम चाहे कोई हो, निकलने के बाद अभूतपूर्व बताए जाते हैं बल। सिलक्यारा टनल की पूरी कहानी को भी पार्टी वाले अपनी-अपनी तरह से अभूतपूर्व बताने लगे हैं। दाज्यू, कर लेने दो सबको अपने मन की। अच्छा हुआ फंसे हुए 41 लोग सुरक्षित निकल गये.....।

दुनियादारी में कितना कुछ हो चुका है इस बीच। एसएसजे परिसर अल्मोड़ा के पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष पर छात्रा ने दुष्कर्म का आरोप लगाते हुए पुलिस में मामला दर्ज कराया है। गम्भीर आरोप में बहुत कुछ कहा है और पुलिस जाँच कर रही है। दाज्यू, जुवा छात्र नेताओं के कई किस्से कहानियाँ हैं.....

जिसकी जैसे चल रही है, चला रहे हैं। डीजीपी अशोक कुमार के सेवानिवृत्त होने से से पहले के सम्मान के लिये नैनीताल पुलिस ने धमाकेदार पार्टी रख दी, फिर क्या था प्रोटोकॉल.....कौन किसे पूछे? शादी-विवाह के इस सीजन में हल्द्वानी की सड़कों का गाज निकल चुका है। वीआईपी ड्यूटी में डोर डालकर रोक दिया गया। कांग्रेस प्रवक्ता दीपक बल्यूटिया कह रहे हैं- 'वीआईपी कल्चर मुसीबत है, इसके खत्म किया जाए।' दाज्यू, कहने-सुनने से क्या जो होने वाला है। कहते रहो.....।

केन्द्र सरकार ने मुफ्त राशन योजना 5 साल और बढ़ा दी है। केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने प्रधानमंत्री मोदी ज्यू की अध्यक्षता में निर्णय लिया। दाज्यू, कितना ही मुफ्त अनाज हो लेकिन चस्के ले डूबेंगे.....

रोडवेज का चालक नशे की हालत में पकड़ा गया। चालक की जाँच-पड़ताल खूब हुई। क्या करे किस्मत खराब होगी।

हल्द्वानी में ईजा-बैंणी महोत्सव के बाहर ईजा-बैंणियों की गिरफ्तारी भी हुई। सिर पार काली पट्टी बांधकर सरकार के खिलाफ नारे लगाने पर यही तो होने वाला ठैरा। किसने कहा था विरोध करो? दाज्यू, सरकार तो सरकार ही ठैरी। सरकार को बहादुर कहना होना है। कितने फूल उछाले थे हमारे सीएम ने.....बहुत अभिभूत हो गए थे बल। छोलिया वालों ने भी खूब दमादम-चुटाचूट की। और जो हुआ, आयोजनों के बहाने छोलिया नर्तकों का रोजगार तो बढ़ा ही है।

जिधर देखो अभूतपूर्व ही हो रहा है। काशीपुर में चन्द्रावती तिवारी कन्या महाविद्यालय की उप प्राचार्य सहित 5 पर रंगदारी का आरोप लगाया है। आरोप लगाने वाले गोविन्द बल्लभ पन्त इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य हैं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

जोहार के बिल्जू.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

गाड़ना, गुफा , शैलाश्रय के सहारे मौसम परिवर्तन के अनुसार प्रवास बदलते रहते थे जिससे शारीरिक सुरक्षा करना भी अति आवश्यक था जिस कारण बोखल सुरक्षा कवच (बुलट प्रुफ जेकेट) से कम न था। जिससे शरीर के अंग का भलीभाँति बचाव किया जा सकता था। बोखल परिधान को केसै विरासत की वस्तु न माने? अवश्य इसके विषय की जानकारी सभी युवा पीढ़ी व शौकाओं को होना ही चाहिए।

मानव ने अपने जीवन यापन हेतु विभिन्न संसाधन का खोज किया है जैसे- खाने के लिए अनाज, दूध प्राप्ति के लिए पशु, मीट मांस हेतु पशु-पक्षी, रहने के लिए घर, परिवहन हेतु वाहन आदि अपनी सुख सुविधाओं के लिए भौतिक संसाधनों में इजाफा करते रहे है जिसमें यंत्र व संयंत्र की आवश्यकता रहती है।

शीतप्रधान क्षेत्र में निवास करने वाले शौकाओं के संस्कृति व सांस्कृतिक स्थिति में भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव अवश्य पड़ा है। जनजाति समुदाय संस्कृति के जननी व अविष्कारक के रूप में आदिकाल से रहे है आज के वैज्ञानिक इसे स्वीकारते भी है।

ज्वखल इस प्रकार का संयंत्र जिस पर प्रकाश डालना आवश्यक है। वह संयंत्र ज्वखाल कहलाता है जिसे एल्कोहोलिक संयंत्र से औषधि संयंत्र का नाम भी दिया जा सकता है। भौगोलिक बनावट व शीतप्रधान क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों ने अपने को बनाये रखने हेतु, उसी अनुरूप अपने लिए हर चीज का इजाद किया है एल्कोहल भी उनमें से एक है जो औषधि युक्त था। अनाज, आदि, चीजों का फर्मेंटेशन कण्वन विधि प्रथमख्रदृष्टया जान मीठा पेय कम एल्कोहोलिक रहता है तथा उसके बाद दूसरी विधि ज्वखल संयंत्र ईंधन, पतेला (तौल) ज्वखल (लकड़ी निर्मित भाप बनने वाला तथा एक ओर से भाप बाहर जाने वाली छिद्र) उसके ऊपर कुन्नी (पराद) सबसे नीचे तौला, बीच में ज्वखल, पराद हल्के हल्के आंच (अग्नि) में ईंधन से तैयार दारू (एल्कोहल) तैयार हो जाता है। संयंत्र के चारों ओर आटा का लेप हवा बन्द रक्खा जाता है जिसका स्वाद बदल जाता है भाप का पानी अधिक एल्कोहोलिक रहता है।

शौका लोग अत्यधिक ठण्ड प्रदेश में रहने के कारण इसका प्रयोग सकारात्मक सोच के साथ यदा-कदा करते थे, औषधीय रूप में- अपच, पेट दर्द, सर्दी जुकाम, कटे फटे, घाव आदि उपयोग में लाते थे। जनजातीय समुदाय ही आज के बृहद संयंत्रों का मूल अविष्कारक रहे होंगे।

अपने भेड़-बकरी, मवेशियों के लिए भी प्रयोग अवश्य करते थे। बहुआयामी उपयोगी होने के साथ साथ उत्सवों में भी थोड़ा पीने-पीलाने के दौर से मंनोरंजन भी होते रहा है।

कालान्तर में यह शाही शौक राजघरानों, शाही सामन्ती का शौक बनकर सुरापान कर मनोरंजन का साधन बनकर उत्सवों की शान बनने लगी किन्तु इसकी गाथा अवश्य ही ऐतिहासिक आदिकाल से अवश्य जुड़ी है। जिसमें लोगों ने जीवन जीने के संसाधनों का इजाद जीवनपयोगी रहा। अन्ततः इसका दुरपयोग भी होता रहा है।

ज्वखल की संस्कृति शौका समाज में समाप्त होती जा रही है, माने न माने सदियों से एक लगाव ज्वखल से भी बना है 'भूत पितर छल छद' इसके बिना सम्भव नहीं है।

आज शहरवासियों के लिए यह प्रचलन समाप्त ही है किन्तु आज भी शौका बहुल गाँवों में अपनी इस परम्परा को आज भी लोग निभा रहे है। शादी, विवाह, तीज-त्यौहार में अपने पितरों को स्मरण चढ़ावे से अवश्य करते हैं। धीरे-धीरे यह संस्कृति समाप्ति की ओर है पर लिपिबद्ध कर अपनी स्मृतियों को याद सदैव करते रहेंगे।

इस लेखन से आधुनिक शौकाओं को कुछ अटपटा अवश्य लग रहा हो तथा उल्लेख प्रश्न चिन्ह भी खड़ा कर सकता है किन्तु अपने उन महान चरित्रवान व्यक्तियों का जिक्र करना भी आवश्यक समझता हूँ जिन्होंने अपने सतकर्म, सद्चरित्र, सद्भावना, सद् व्यवहार, संयम, दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ समाज को नियंत्रित कर संस्कृति-संस्कारों को उपने अनुरूप ढ़ालते देखा है। समाजवाद को गौरवपूर्ण आवरण चढ़ाते रहें। लेखक आहतपूर्ण सोच न रखते अतीत का यथार्थ चिन्तन करना चाहता है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

शूटिंग-फिल्म

अतिथि सत्कार

'अतिथि सत्कार' मूलत: भारत के ग्रामीण/पहाड़ी इलाकों से बड़े शहरों को जोड़ने वाले छोटे शहर की की कहानी है, जहाँ आजकल सुख सुविधा की खोज में हर कोई बसना चाहता है ताकि वह पहाड़ी क्षेत्रों की ताज़ी हवा पानी की साथ-साथ शहरी सुख सुविधाओं का आनन्द उठा सके। पिताजी की आशीर्वाद (रिटायरमेंट के फण्ड) और अपने कम्पनी के लोन से एक सुन्दर घर 'अतिथि सत्कारम' में चन्दर और उसकी पत्नी अपनी छोटी से बच्ची की साथ रह रहे हैं। रजनी प्राइवेट बैंक में कैशियर है, यहाँ पर सिवाय पहाड़ी हवा पानी के सब शहरी वातावरण के बीच सुबह से शाम तक की व्यस्त छटपटाहट में अतिथियों का आगमन कैसे परिवार पर अपना अच्छा और कुछ खट्टा मीठा अहसास करता है चूँकि जगह ऐसी है की यदि इंसान को बड़े शहरों से पहाड़ जाना है या फिर पहाड़ से बड़े शहरों को जाना है उसकी तैयारी अतिथि ऐसे शहरों में रह रहे रिश्तेदार की मदद या अपना उल्लू सीधा करने में उसका उपयोग करते है वह कैसे या किस हाल में गुजर बसर कर रहा है। उससे उनका कहीं से कहीं तक कोई नाता नहीं रहता, कुछ अतिथि उनकी समस्यों का अनुभव करके परेशानियां दूर करने में मील का पत्थर साबित होते दिखाई पड़ते हैं, आस-पास मोहल्ले पर भी अतिथि अपनी क्या छाप छोडते हैं वह भी चित्र इसमें देखने को मिलता है, कैसे यह परिवार अपने संस्कारों के अधीन, घर में लगातार आ रहे अतिथियों के अतिथि सत्कार में तल्लीन होकर अपना क्या खोता है और क्या पाता है कहानी में दिखाने की कोशिश की है। ऐसे क्षेत्रों में जमीन की खरीद फरोक्त पर भू कानून की आवश्यकता और महत्ता पर भी प्रकाश डाला गया है अत: यहाँ पहाड़ नहीं है पहाड़ यहाँ से शुरु होते हैं पर्यटकों के लिए सन्देश भी दिया गया है कहानी में सभी पात्रों की अपनी खास भूमिका देखने को मिलेंगे।

इस पूरी फिल्म में मुम्बई, दिल्ली के अलावा नैनीताल, हल्द्वानी, रामनगर के स्थानीय कलाकारों ने अभिनय किया है। स्क्रिप्ट व निर्देशन जगदीश तिवारी व निर्माता- पूजा, मुख्य निर्माण- देवकी शर्मा के साथ ही शूटिंग क्षेत्र हल्द्वानी में नैनीताल से अनिल घिल्डियाल, कल्यानी गंगोला, राजेश आर्या, हल्द्वानी से शाहिल व जगदीश पाण्डे हैं। इसमें हल्द्वानी से सोनू बिष्ट भी हैं। इसकी शूटिंग 9 दिसम्बर से शुरु होगी।

ज्योतिष की बातें - 156

13 दिसम्बर 2023 को बुध धनु राशि में वक्री हो जाएगा, अत: अगले 20 दिन बुध अपने कारक विषयों में शुभाशुभ फल प्रबल रूप से प्रदान करेगा। 16 दिसम्बर 2023 को सूर्य मित्रग्रह गुरु की राशि धनु में प्रवेश करेगा, जहाँ पर गुरु की शुभ दृष्टि भी होगी। अत: सूर्य अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। फलदीपिका के अनुसार सूर्य तीसरे, छठवें, दसवें और ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है अत: अगले एक माह सूर्य स्वास्थ्य, सफलता, यश पराक्रम आदि अपने कारक विषयों में तुला, कर्क, मीन व कुम्भ राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। अन्य राशियों को भी सूर्य सामान्य शुभ फल प्रदान करेगा।

खरमास प्रारम्भ- सूर्य के गुरु की राशि धनु में गोचर करने के कारण अगले एक माह तक विवाह आदि शुभ कार्य स्थगित रहेंगे।

इस स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक ग्रह का अलग-अलग गोचर फल प्रस्तुत किया जाता है जबकि सूक्ष्म रूप से व्यक्ति विशेष के लिए गोचरफल उसकी जन्मकुण्डली, महादशा आदि बातों पर निर्भर करता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 47

टीकाकरण - पुन: विचारणीय

भारत में विभिन्न बीमारियों से बच्चों को बचाने के लिए टीकाकरण की शुरुआत 1975 में हुई, फिर 1985 में सार्वभौमिक टीकाकरण अभियान चलाया गया और 1996 से व्यापक रूप से पूरे देश में टीकाकरण का अभियान चलाया जा रहा है। पहले कोई एक टीका लगता था, फिर तीन टीके हो गए। इसके बाद तीन टीके और हो गए। अब स्थिति यह है कि खसरा, टिटनेस आदि छ: बीमारियों से बचाव के लिए बच्चों को जन्म से लेकर 16 वर्ष की आयु तक कम से कम 15 टीके लगाए जाते हैं। इसके साथ ही नई-नई बीमारियाँ आती हैं उनसे बचाव के लिए अलग से टीके लगाए जाते हैं। आश्चर्य तो यह है कि कुछ टीके तो बच्चे के जन्म के पूर्व ही लगा दिए जाते हैं।

यह सारा अभियान विश्व स्वास्थ्य संगठन के निर्देशानुसार अथवा अन्य तथाकथित विकसित देशों की नकल करते हुए चलाया जा रहा है। इसमें भारतीय परिवेश, वातावरण और यहाँ की मूल चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद का किंचित् भी विचार नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त बच्चों को कैल्शियम, आयरन की गोली और पेट के कीड़े मारने की दवा प्रत्येक स्कूल में बच्चों को जबरदस्ती दी जाती है, जिससे कई बार बहुत से बच्चे गम्भीर रूप से बीमार हो जाते हैं और कुछ तो मृत्यु को भी प्राप्त हो जाते हैं । ये दवाइयाँ देते समय बच्चों के बलाबल का और उनकी प्रकृति का थोड़ा भी ध्यान नहीं रखा जाता है । जबकि दवा के प्रत्येक रैपर लिखा रहता है- 'चिकित्सक के परामर्श के अनुसार'।

इस टीकाकरण से क्या वे बीमारियाँ वास्तव में नष्ट हो गई हैं ? क्या उन बीमारियों के स्थान पर नई-नई बीमारियाँ नहीं आने लगी हैं ? इस पर विचार करने की आवश्यकता है। मेरे विचार से इन टीकों के लिए बच्चों को बाध्य नहीं करना चाहिए। यह उनके माता-पिता की इच्छा पर छोड़ देना चाहिए कि वे कौन सा टीका अपने बच्चों को लगवाएं और कौन सा न लगवाएं। आयुर्वेद का भी सिद्धान्त स्वीकार करना चाहिए ।

-सरल

पुराणी चीज हरै विलै गई

पैलियक हर पुराणी चीजों की चौल खतम हैगे,
उं सब अब हरै विलै गईं
वि चीज अब कति देखन में नी औनी,
वी चीज जाणी कां हरै विलै गईं,
वी चीज कें लोग भूलि लै गईं।
पैली पहाड़ों में आपन घरों में गौरु गुबरे ल,
लिपि करछी, अब वीक चौल खतम है गे,
अब त लोगो ल ज्यादेदतर सीमेंट व लिन्टर क मकान बणे हाली,
उन घरों क फर्श में टाइल बिछे हाली,
योई वास्ता अब गोबरेल् लीपण कि चौल खतम हैगे,
पैली नानतिना क पैराव- सुरियाव, झगुल व फ्राक हूँछी,
अब त सलवार-कुर्त, जिन्स व टी-शर्ट पैरल लाग गईं,
पैली चुलन में लाकड़ ल भिनेर जल छी,
अब लाकड़ जाग पर गैस क चुल चल गईं,
पैली खाण- दाव-भात तौली व भड्डू में पकछी,
अब उनर जाग कूकर, डेग व भगौना में पणोंन क चौल हैगे,
अब तौल-कष्यार की चौल देखन में नी आँन,
पैली मैस घरों में गौरु, भैंस व बकर पाल छी,
और अब त कुकुर व बिराऊ पालन में जोर हैगो,
पैलियक नानतिन ईंजा बाबू कैवेर बुलाछी
आब नानतिन मम्मी डैडी सिखी गईं,
शहरों की बात छोड़ो, अब गौनौ में ल
ईंजा बाबू कि जाग मम्मी पापा कौन लग गईं,
पैलियक मैस घरों में, या भियार लें आपणी मातृभाषा बुलाछी
यानि पहाड़ी भाषा में बात करछी,
अब पहाड़ी भुली बेर हिन्दी अंग्रेजी भाषा क प्रयोग करन लागी गईं,
पैली गौनों में बिजली कनेक्शन नी छी ता
लोग अपन घरन में लालटेन ढिबरी ल उजाल करछीं,
जब बटी गौनो में बिजली कनेक्शन लाग गईं,
तब ती लालटेन व डिबरी भुली गई, और बिजली बल्ब ल उजाव हुनीं,
पैली गौनो में बैलगाड़ी व घोड़ों में सफर हूँछी,
अब सड़क बनना बाद बाइक कार व बसों में सफ़र चालू हैगो,
खेती पाति जाग बाज पड़ गईं,
उनर आग कुरी कि झाड़ी जाम गे,
ज्यादा बात का तक कौनू
पुराणी चीज सब हरै विलै गईं,
कति दिखन में नि औने
पुराणी हाव भुली गई।।

-नन्दा बल्लभ पाण्डेय
ज्योलीकोट, नैनीताल

पुस्तक समीक्षा

नेपाली कविता संग्रह- छट्पटी

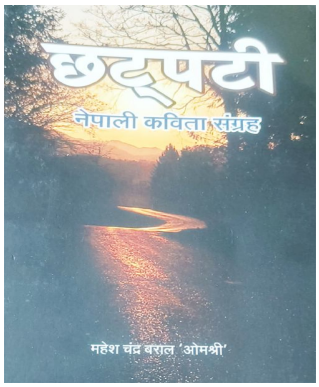

पिथौरागढ़ के टकाना निवासी रंगकर्मी महेश बराल का इन दिनों नेपाली कविता संग्रह 'छट्पटी' चर्चा में है। जनसरोकारों से जुड़े श्री बराल ने छटपटाहट को जिस प्रकार शब्दों में पिरोया है वह एक मौन आन्दोलन कारी की कथा और सामने कहने वाले योद्धा का क्रन्दन सा है। लेखक ने कहा है कि यह उनकी आत्मा की छटपटाहट है। जीवन में तमाम तरह के उतार-चढ़ाव के साथ संसार के रहस्य को जानने की उनकी उत्सुकता शब्दों में बंधी है।

तीन दशकों से भी अधिक समय से जन समस्याओं को लेकर संघर्ष करने वाले और रचनाकर्म में लगे महेश बराल का व्यवहार ही रंगकर्म है, इसमें वह गीत संगीत लेखन से हमेशा संलग्न रहे हैं। एक साधारण सा विद्यार्थी बनकर उनमें हमेशा सीखने की जिज्ञासा रही है। उनकी छटपटाहट अपनी दुदबोली में है जो पूरे रहस्य को खोलती है। तभी तो उन्होंने हाम्रो सपना, मौन छ, केटीहरु, तिम्रो तृष्णा, अंगलो भरी माया, के माया हो र, कथा पुतलीको जैसी चार दर्जन कविताओं का संग्रह रच डाला। नेपाल के विभिन्न जनवादी आन्दोलन के अग्रणीय नेता और पिथौरागढ़ के रंगकर्मी महेश बराल को इस रचनाकर्म के लिये ढेरों बधाई।

डीडीहाट में खुलेगा सैनिक कल्याण कार्यालय

डीडीहाट। सीमान्त क्षेत्र के पूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों को सैनिक कल्याण से सम्बन्धित कार्यों के लिये डीडीहाट में ही सुविधा के उद्देश्य से सैनिक कल्याण कार्यालय की सुविधा होगी। इसके लिये 5 नाली भूमि चिन्हित कर ली गई है। दो दिन के भ्रमण में पहुँचे सैनिक कल्याण मंत्री गणेश जोशी ने इस बारे में बताया।

कार्बेट क्षेत्र में जानमाल की सुरक्षा के लिये मिले

रामनगर। कार्बेट प्रशासन के वार्डन ग्रामीणों संग जानमाल की सुरक्षा किये जाने के सम्बन्ध में अधिकारियों से मिले। कहा कि बाघ द्वारा मारे जाने पर 25 लाख मुआवजा, मृतक आश्रित को वन विभाग में स्थाई नौकरी, 5000 रुपये जंगली जानवर द्वारा फसल छतिपूर्ति प्रतिमाह, जलौन लकड़ी चुगान प्रतिबन्ध होने के कारण मुफ्त सिलेंडर, नोडल अधिकारी की नियुक्ति, 2012 की मुआवजा राशि को उसी तर्ज पर बढ़ाया जाए जिस तर्ज पर वाइल्डलाइफ टूरिस्ट बड़ा है। यह भी कहा है कि टूरिस्ट लोन बड़े है।, पेट्रोल डीजल की कीमतों में ईजाफा हुआ है। इन बातों को प्रधानमंत्री जो वाइल्डलाइफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी होते हैं, उन तक यह बात पहुँचाई जाए।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

भगत सिंह टोलिया को विशिष्ट सेवा मैडल सम्मान

बीएसएफ की 59वीं स्थापना दिवस परेड अवसर पर गृहमंत्री भारत सरकार अमित शाह ने सराहनीय एवं उत्कृष्ट सेवा के लिये रिटा.डीआईजी भगत सिंह टोलिया को सम्मानित किया। श्री टोलिया का नाम सराहनीय सेवा के लिये महामहिम राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवा पुलिस मैडल के लिए नामित हुआ था, जिसे 1 दिसम्बर 2023 को सुरक्षा बल स्थापना दिवस परेड अवसर पर प्रदान किया गया।

उल्लेखनीय है कि अपनी सेवा के अलावा सामाजिक कार्यों में भी श्री टोलिया हमेशा जनसेवक के रूप में रहे हैं। डीडीहाट के बाद वह अब हल्द्वानी में अपना निवास स्थान बना चुके हैं परन्तु पहाड़ से उनका लगाव उन्हे समाज से जोड़े रखता है। उप महानिरीक्षक सीमा सुरक्षा बल, फ्रंटियर मुख्यालय जम्मू से सीमा सुरक्षा बल में 35 साल की सराहनीय एवं उत्कृष्ट सेवा करने के बाद 31 मार्च 2022 को यह सेवानिवृत्त हुए थे।

श्री भगत सिंह टोलिया का जन्म डीडीहाट में 1962 में हुआ। उन्होंने अपनी प्राइमरी शिक्षा पैतृक गाँव में तथा इण्टरमीडिएट की शिक्षा वर्ष 1980 में राजकीय इण्टर कालेज डीडीहाट से पास की। इसके पश्चात अधिकारी ने स्नातक की शिक्षा कुमाऊँ विश्वविद्यालय अल्मोड़ा से 1982 में उत्तीर्ण की। विश्वविद्यालय बालीबाल टीम के तीन साल लगातार सदस्य रहे। अधिकारी वर्ष 1987 में सीमा सुरक्षा बल में सहा. कमाण्डेंट के पद पर भर्ती हुए। सेवा के अग्रिम दिनों में पश्चिमी बंगाल सुन्दरवन इलाके में कम्पनी कमाण्डर के पद पर कार्य किया। बीएसएफ रजत जयन्ती वर्ष 1990 के दौरान अधिकारी का चयन टीम 'रीवर सफारी अभियान' लीडर के रूप में किया गया, जो कि कलकत्ता से दिल्ली तक दो बोटों के साथ बरसात के

दिनों में गंगा नदी के विपरीत धारा से इलाहाबाद, इलाहाबाद से दिल्ली तक यमुना नदी के विपरीत धारा में 1850 किमी की दूरी 38 दिनों में तय की, जोकि इस तरह का भारत का पहला साहसिक अभियान था, को सफलता पूर्वक पूरा किया।

अधिकारी वर्ष 1991 में सीमा सुरक्षा बल की पर्वतारोहण टीम के सदस्य रहे एवं पर्वतारोहण टीम ने उत्तराखण्ड के त्रिशूल और हरदेव शिखर पर सफलता पूर्वक फतह हासिल की।

श्री भगत सिंह टोलिया ने पंजाब में 1988-89 उग्रवाद के दौरान सराहनीय कार्य किया। अधिकारी के नेतृत्व में 1993 से 1995 तक कुपवाड़ा (जम्मू और कश्मीर) क्षेत्र में खूंखार उग्रवादियों का खातमा किया गया, जिसके लिए अधिकारी को महानिदेशक का तीन बार डी. जी. बी.एस.एफ. का प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मानित किया गया।

अधिकारी ने 1995 से 1999 तक गुजरात सेक्टर के रण ऑफ कच्छ एरिया में भी सराहनीय कार्य किया। अधिकारी 2001 से 2002 तक संयुक्त राष्ट्र मिशन कोसोवो में कार्यरत रहे, जिसके लिए संयुक्त राष्ट्र शान्ति पदक से सम्मानित किया गया।

अधिकारी ने 1999 , सांभा(जम्मू) के तैनाती के दौरान आर्मी के साथ 'आपरेशन विजय' और 2002-03 में बारमेंड, मुनावा, तैनाती के दौरान आर्मी के साथ 'आपरेशन पराक्रक' में भी भाग लिया। श्री टोलिया कमाण्डेण्ट के पद पर रामबन के गूल, धर्माड़ी उग्रवादग्रस्त क्षेत्र में वर्ष 2004 से 2006 तक तैनात रहे और अधिकारी के कमान में सभी कुख्यात उग्रवादियों को मार गिराया गया। अधिकारी 2006 में अमृतसर खासा कैम्प में कमाण्डेण्ट के पद पर नियुक्त थे, जिसके अधीन आटारी बाघा बार्डर में रोज सायंकाल को रिट्रीट सेरेमनी, पाक रेंजर और बीएसएफ की संयुक्त परेड होती है। श्री टोलिया प्रतिनियुक्ति पर सशस्त्र सीमा बल में चार वर्ष के लिये 2008 से 2011 तक कार्यरत रहे। एक वर्ष सोनोली, नेपाल सीमा, गोरखपुर एवं तीन वर्ष कमाण्डेंट 11 वीं वाहिनी एसएसबी के पद पर डीडीहाट नेपाल सीमा कालापानी से झूलाघाट नेपाल सीमा की सुरक्षा सुनिश्चित की। साथ ही सामाजिक कार्य में भागीदार रहे।

अधिकारी उप महा निरीक्षक के पद पर गोकुलनगर, त्रिपुरा में कार्यरत रहे, जिस दौरान भारत बांग्लादेश बार्डर पर कानून व्यवस्था सुनिश्चित की। 2012 में राष्ट्रपति के द्वारा उत्कृष्ट सेवा के लिये पुलिस पदक से सम्मानित किया। इनकी कड़ी मेहनत एवं लगन को देखते हुए बल मुख्यालय, सीमा सुरक्षा बल, नई दिल्ली में उप महानिरीक्षक (परिवहन) के पद पर 2017 से 2021 तक पदस्थ किया गया।

अधिकारी वर्तमान में फ्रंटियर मुख्यालय सीमा सुरक्षा बल, जम्मू में उप महानिरीक्षक के पद पर रहे। उनके 35 वर्ष के सराहनीय एवं उत्कृष्ट सेवाकाल को देखते हुए स्वतंत्रता दिवस 2012 में 'राष्ट्रपति का सराहनीय पुलिस पदक' एवं गणतंत्र दिवस 2022 के लिए माननीय राष्ट्रपति के 'विशिष्ट पुलिस सेवा पदक' के लिये नामित किया गया।

मल्लिकार्जुन महोत्सव में रंगारंग कार्यक्रम

अस्कोट। मल्लिकार्जुन महोत्सव में रंगारंग कार्यक्रम हुए। इसमें डीडीहाट, पिथौरागढ़ से लेकर अन्य स्थानों तक से कलाकारों ने भागीदारी की। समिति के अध्यक्ष महेश पाल, वीरजंग पाल, गणेश भट्ट, मनोज लुंठी, रवीन्द्र पाल, तनुज पाल सहित तमाम लोग थे। विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन भी हुआ।

वासुकीनाक मेले में परम्परागत जुटे

बेरीनाग। लोहाथल में एक दिवसीय वासुकीनाग मेले पर परम्परागत तरीके से लोग जुटे। ब्लाक प्रमुख विनीत बाफिला ने महोत्सव का उद्घाटन किया और स्थानीय कलाकारों ने सुन्दर प्रस्तुतियां दीं। इस अवसर पर जिपं. सदस्य नन्दन बाफिला, सांसद प्रतिनिधि सतीश जोशी, क्षेत्र पंचायत सदस्य निर्मला चुफाल, लक्ष्मण कार्की, मनोज कार्की, नारायण सिंह, धीरज जोशी, नारायण सिंह भी उपस्थित थे।

पिथौरागढ़ में बाल मेले का आयोजन

पिथौरागढ़। इस बार शरदोत्सव आयोजन नहीं होने के कारण बाल मेले को कराया गया। नगर पालिकाध्यक्ष राजेन्द्र सिंह रावत ने मेले का उद्घाटन करते हुए बताया कि शरदोत्सव के लिये बच्चों ने काफी तैयारी की थी लेकिन न होने के कारण बाल मेला कराने का निर्णय लिया गया। बताते चलें कि शरदोत्सव को लेकर पालिका के अधिकांश सदस्यों ने विरोध किया तो उसे टालना पड़ा था।

बौराणी मेला स्मृतियों के साथ मंथन

गंगोलीहाट। बौराणी का पौराणिक मेला इस बार भी धूमधाम के साथ मनाया गया। मेले में समय के साथ बहुत कुछ बदला है लेकिन स्मृतियों के साथ मंथन करने वाले इसके मूल को बनाए हुए हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक जाएं तो बौराणी के मेला देशभर में जाना जाता था क्योंकि कहने को तो यहाँ जुआ होता था लेकिन इस बहाने देश के बड़े शहरों के व्यापारी आते थे और बकायदा पटावारियों की ड्यूटी लगती थी। यह खेल जुआरियों का मनोरंज तो था ही साथ ही लोक कलाकारों को काफी मान मिलता था। बौराणी संस्कृति के असल रंगढंग देखने को मिलते थे जिसमें कुथले, पत्थर की चक्की, सूपे डाले तमाम सामग्री होती थी। बाद को विकास के नाम पर यह कहा गया कि जुआ बन्द होना चाहिये और वर्तमान में जारी मंच के चटक-मटक कार्यक्रमों को परोसा जाने लगा। ऐसे में इस मेले का असल स्वरूप तो बदल गया। फिर भी लम्बी मशाल जलाने का आकर्षण यहाँ बना हुआ है।

दीपोत्सव, देवीरथ, परिक्रमा का जोर

चम्पावत। क्षेत्र में मेले त्यौहारों की खूब धूम मची। माँ बाराही धाम देवीधुरा में चल रहे दीपोत्सव में कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। यहाँ भी स्टार नाइट का जलबा दिखाई दिया।

भारत-नेपाल सीमा पर नागार्जुन मन्दिर में आयोजित नगरूघाट मेले में भारत और नेपाल के सैकड़ों श्रद्धालुओं ने नागार्जुन बाबा का आशीर्वाद लिया।

चम्पावत में खरही के बैजनाथ में परम्परा अनुसार डोलायात्रा में भारी भीड़ जुटी। लधौनधुरा मन्दिर पहुँची डोलायात्रा की परिक्रमा के बाद शिव डोले को लधौलधुरा में खरही के ईजर मन्दिर में लाया गया। वहाँ प्रकाश शर्मा को नया पुजारी बनाया गया। अब प्रकाश अगली कार्तिक चतुर्दशी तक डोले की पूजा करेंगे।

जेएसएस बागेश्वर पड़ाव हेतु ज्ञापन सौंपा

बागेश्वर। भोटिया पड़ाव बनखोला में बनी दुकानों को खाली करने की मांग मुखर होने लगी हे। जोहार सांस्कृतिक समिति ने समस्या का समाधान शीघ्र न होने पर आन्दोलन की धमकी दी है। समिति के संरक्षक गंगा सिंह पांगती के नेतृत्व में डीएम को इस बारे में ज्ञापन प्रेषित किया गया है।

श्री पांगती ने कहा कि जनवरी 2024 को बागेश्वर में ऐतिहासिक उत्तरायणी मेला लगेगा। इस मेले में जनजाति समाज के लोग कारोबार करने के लिए दूर-दराज से यहाँ पहुँचते हैं। लेकिन भोटिया पड़ाव बनखोला में बनी दुकानों को अभी तक खाली नहीं कराया गया है। जबकि जनजाति समाज के लोग दुकान लगाने के लिये समान लेकर आने लगे हैं। दुकान खाली न होने से उन्हें दिक्कत हो रही है। समिति ने जल्द दुकानें खाली कराने की मांग की है ताकि समय पर बिजली, पानी आदि की व्यवस्था ठीक की जा सके। ज्ञापन देने वालों में पूजा जंगपांगी, मनोहर मर्तोलिया, श्रीराम राणा सहित कई लोग उपस्थित थे।

शिलान्यास, लोकार्पण और प्रर्दशन

अल्मोड़ा। स्वास्थ्य मंत्री धन सिंह रावत ने जिला मुख्यालय से लगे हवालबाग विकासखण्ड में बहुउद्देशीय शिविर की अध्यक्षता की और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने 6 विधानसभाओं के लिये 6464.97 लाख रुपये की 58 योजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया।

स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि आने वाले दिनों में वह स्वयं विकास खण्ड वार जनता दरबार लगाएंगे और समस्याओं का त्वरित निस्तारण होगा।

दूसरी ओर अल्मोड़ जिला मुख्यालय की बदहाल स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार न होने से नाराज कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने विधायक मनोज तिवारी के नेतृत्व में प्रदर्शन किया। विधायक तिवारी करबला के पास मंत्री के काफिले के आगे सड़क पर लेट गये और जिले के प्रभारी व चिकित्सा स्वास्थ्य मंत्री धनसिंह रावत के कार्यक्रम का विरोध किया। कहा स्वास्थ्य सेवाएं पूरी तरह चरमरा गई हैं।

परिक्रमा

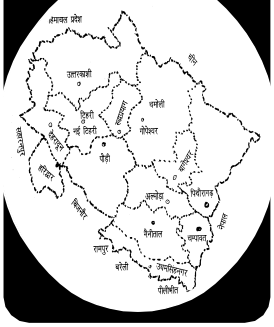

देवीधुरा कालेज अब सूबे.चम्याल नाम से

चम्पावत। शासन ने देवीधुरा आदर्श राजकीय महाविद्यालय देवीधुरा का नाम शहीद सूबेदार मेजर नन्दन सिंह राजकीय आदर्श महाविद्यालय देवीधुरा किये जाने की स्वीकृति दी है। विधायक खुशाल सिंह अधिकारी ने उक्त जानकारी दी है।

सर्वे चौक पर सर्वेयरों के स्टैच्यू

देहरादून। सर्वे चौक के गोल चक्कर को नए तरीके से सजाते हुए महान सर्वेयर पं. नैन सिंह रावत और राधानाथ सिकन्दर के स्टैच्यू बनाए गए हैं। प्रख्यात मूर्तिकार मनोज श्रीवास्तव ने इन्हें तैयार किया है। स्मार्ट सिटी के प्रोजेक्ट मैनेजर प्रवीण कुश कहते हैं कि सर्वे चौक को सर्वे ऑफ इण्डिया की वजह से जाना जाता है, इसलिए सर्वे चौक पर सर्वे ऑफ इण्डिया के दो महान सर्वेयरों के स्टेच्यू लगाये गये हैं। इससे नई पीढ़ी को इतिहास के बारे में जानकी मिलेगी और जानने की जिज्ञासा बढ़ेगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

भालू का आतंक

मल्ला जोहार विकास समिति बार-बार उठा रही है सवाल और सीमान्त सुरक्षा को लेकर मांगा जवाब

पि.हि. प्रतिनिधि

जोहार। मल्ला जोहार क्षेत्र में इन दिनों जंगली जानवर भालू के आतंक से लोग परेशान हैं, इस मसले को मल्ला जोहार विकास समिति बार-बार उठा रही है और सीमान्त सुरक्षा को लेकर शासन प्रशासन से जवाब भी मांग रही है।

इन दिनों में कई घरों में भालू द्वारा तोड़फोड़, सामान बर्बादी, राशन का नुकसान होने की सूचना मिली है। मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने प्रशासन को पत्र भेजते हुए कहा है कि तिब्बत चीन सीमा के नजदीक गाँवों में इन दिनों जंगली जानवर भालू का आतंक बना हुआ है। मकान को तोड़कर अन्दर रखे गए सामग्री को नुकसान पहुँचाने की घटनाएं लगातार हो रही हैं। ऐसे में जिला प्रशासन की संयुक्त टीम गठित कर मल्ला जोहार का निरीक्षण करे कि किन-किन व्यक्तियों के मकान को क्षति पहुँची है ताकि ऐसे पीड़ित लोगों को तहसील प्रशासन की देखरेख में नुकसान का मुआवजा मिल सके। जंगली जानवरों की रोकथाम के लिये वन विभाग की टीम को सक्रिय करना जरूरी है।

उल्लेखनीय है कि उच्च हिमालयी क्षेत्रों में रहने वाले भालू सामान्यतः जड़ीबूटी खाते हैं लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इसे नमक-चावल का स्वाद लग चुका है। चालाक प्राणी भालू माइग्रेशन के समय जब लोग अपने घर छोड़ निचली घाटियों की ओर आते हैं, भालू मिलम, टोला, बिल्जू, बुर्फू, मर्तोली, ल्वा, मापा, गनघर, लास्पा,, रालम आदि ग्रामों में मकानों की छत तोड़कर भीतर चला जाता है और खाद्य सामग्री खाने के अलावा नुकसान पहँचाता है। एसडीएम यशवीर सिंह ने बताया है कि हिमालीय गाँवों में भालुओं ने घरों के ताले तोड़े हैं ऐसी शिकायतें मिल रही हैं। वन विभाग निरीक्षण कर रिपोर्ट देगा।

उत्तराखण्ड को संदेश और..

प्रथम पृष्ठ का शेष

आवश्यकता होती है। फिलहात तो 17 दिन की कड़ी मशक्कत के बाद 41 मजदूरों को सफलतापूर्वक बाहर निकालने वाला आपरेशन सिलक्यारा किसी सुरंग या खदान में फंसे मजदूरों को निकालने वाला देश का सबसे लम्बा रेस्क्यू आपरेशन बना गया है। इससे पहले वर्ष 1989 में पश्चिमी बंगाल की रानीगंज कोयला खदान से दो दिन चले अभियान के बाद 65 मजदूरों को सुरक्षित बाहर निकाला गया था। देश-दुनिया के विशेषज्ञों ने दिन-रात एक कर इस अभियान को मकाम तक पहुँचाया। 13 नवम्बर 1989 को पश्चिम बंगाल के महाबीर कोल्यारी रानीगंज कोयला खदान जलमग्न हो गई थी। इसमें 65 मजदूर फंस गए थे। इनको सुरक्षित बाहर निकालने के लिए खनन इंजीनियर जसवन्त गिल के नेतृत्व में टीम बनाई गई। उन्होंने सात फीट ऊँचे और 22 इंच व्यास वाले स्टील कैप्सूल को पानी से भरी खदान में भेजने के लिए नया बोरहॉल बनाने का आइडिया दिया। दो दिन के आपरेशन के बाद आखिरकार सभी मजदूरों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया था। उस अभियान में गिल लोगों को बचाने के लिए खुद एक स्टील कैप्सूल के माध्यम से खदान के भीतर गए थे। 1991 में तत्कालीन राष्ट्रपति आर. वेंकटरमन ने उन्हें सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक से नवाजा था। उस अभियान में मजदूरों की संख्या सिलक्यारा से ज्यादा थी, लेकिन उन्हें निकालने में समय कम लगा था। सिलक्यारा में 13वां दिन बीतने के बाद मजदूर बाहर निकाले जा सके। राज्य और केन्द्र सरकार की सभी एर्जेसियां, अधिकारी और कर्मचारियों ने जी-तोड़ मेहनत और जज्बे से इस मिशन को मुकाम तक पहुँचाया है। केन्द्र और राज्य सरकार की तमाम टीमें पूरे 17 दिन तक पूरी तन्मयता और मनोयोग से रेस्क्यू में जुटी रहीं। मख्यमंत्री निरन्तर स्थलीय निरीक्षण करने साथ ही रेस्क्यू टीमों की हौसला अफजाई करते रहे। रेस्क्यू आपरेशन में एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, बीआरओ, आरवीएनएल, एसजेवीएनएल, ओएनजीसी, आईटीबीपी, एनएचएआईडीसीएल, टीएचडीसी, उत्तराखण्ड शासन, जिला प्रशासन, थल सेना, वायुसेना समेत तमाम संगठनों के अधिकारियों और कर्मचारियों ने अहम भूमिका निभाई। सिलक्यारा हादसा आपदाओं के लिए सम्वेदनशील उत्तराखण्ड राज्य को सबक भी सिखा गया कि वह आपदा में केन्द्रीय एर्जेसियों का बार-बार मुंह नहीं ताक सकता। उसको खुद अपने बूते पर पुख्ता तैयारियां करनी होंगी। आपरेशन की कामयाबी के लिए उत्तराखण्ड सरकार ने बेशक सहयोगी की भूमिका में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी, लेकिन जानकारों का मानना है कि सरकार को इससे अधिक तैयारी करनी होगीयह पूरा घटनाक्रम प्राकृतिक आपदाओं के लिहाज से सम्वेदनशील उत्तराखण्ड को कई सबक सिखा गया। आपदाओं का अक्सर सामना करने वाले उत्तराखण्ड राज्य के लिए यह घटना कायदे से सबक सीखने वाली है। सिलक्यारा हादसा ने कई सवाल भी खड़े किए है। उत्तराखण्ड में हजारों करोड़ रुपये की परियोजनाओं का निर्माण होना हैं। इनमें कई रोपवे, सुरंगों का निर्माण प्रस्तावित हैं। ऐसे में सिलक्यारा सरीखी घटनाओं का खतरा हमेशा बना रहेगा। लेकिन क्या उन घटनाओं से निपटने के लिए उत्तराखण्ड सरकार और आपदा प्रबन्धन विभाग उस हद तक तैयार हैं।

अंडोला को शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विषयों पर विभिन्न लेखन पर सम्मानित

उत्तराखण्ड कर्मचारी महासंघ द्वारा तुला एस संस्थान देहरादून के सभागार में राष्ट्रीय शिक्षा निति-2020 के परिदृश्य एवं चुनौतियों पर एक दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमे राज्य के 12 विश्वविद्यालयों कर्मचारियों ने प्रतिभाग किया। इस विषय पर एक पत्रिका का भी विमोचन किया गया। कार्यक्रम में उत्तराखण्ड ओपन यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. ओपी नेगी, पूर्व कुलपति व उच्च शिक्षा सलाहकार प्रो. एमएम रावत, सचिवालय संघ के अध्यक्ष, राजकीय कर्मचारी संघ महासचिव आदि ने प्रतिभाग किया। इस मौके पर दून विश्वविद्यालय के डा. हरीश चन्द्र अंडोला को शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विषयों पर विभिन लेखन पर सम्मानित किया गया। इस मौके पर उन्होंने आयोजनकर्ताओं और एवं सभी विद्वानजनों का आभार व्यक्त किया।

सरकार! सूचना देने में क्या दिक्कत है

हल्द्वानी। आरटीआई के तहत मांगी गई सूचना देने में विभागों द्वारा कैसे टालमटोल की जाती है इसका ताजा उदाहरण उत्तराखण्ड विधानसभा सचिवालय में 20 नवम्बर को निस्तारित एक प्रथम अपील के मामले में देखने को मिला है। अपीलीय अधिकारी द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि मांगी गई सूचना पर जो कार्यवाही हो रही है उसके पूर्ण होने पर आवेदक को संशोधित सूचना निरूशुल्क उपलब्ध कराई जाय।

हल्द्वानी के देवकीबिहार निवासी रमेश चन्द्र पाण्डे ने 25 अप्रैल को विधानसभा सचिवालय के लोकसूचना अधिकारी को आवेदन भेजकर दो बिन्दुओं पर सूचना मांगी थी- 1. क्या उत्तराखण्ड विधानसभा सचिवालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों के विभागीय ढांचा/ वेतनमान के सन्दर्भ में समिति का गठन किया गया है, यदि हाँ तो समिति के अध्यक्ष का नाम एवं समिति के सदस्यों के नाम।

2. विधानसभा सचिवालय द्वारा 31 मार्च 2023 को प्रमुख सचिव/ सचिव विधान सभा सचिवालय गुजरात/ झारखण्ड/ उत्तरप्रदेश को भेजे गये पत्र (जिसके द्वारा समिति के सदस्यों को ढांचे/ वेतनमान के अध्ययन हेतु भेजे जाने की सूचना दी गई है) की सत्य प्रतिलिपि एवं इस बावत पत्रवली के नोट/टिप्पणियों की सत्यप्रतिलिपि।

लम्बी कागजी घुडदौड के बाद 4 अक्टूबर को लोक सूचना अधिकारी द्वारा दिये गये प्रत्युत्तर में कहा गया कि बिन्दु संख्या (1) एवं (2) के सम्बन्ध में अवगत कराना है कि अध्यक्ष वेतन विसंगति समिति उत्तराखण्ड द्वारा विधान सभा सचिवालय के ढांचे के सम्बन्ध में कार्यवाही की जा रही है, जो वर्तमान में गतिमान है। इस प्रत्युत्तर के विरुद्ध की गई अपील की सुनवाई के दौरान प्रथम अपीलीय अधिकारी/उप सचिव नीरज थापा ने लोक सूचना अधिकारी एवं अधिष्ठान अनुभाग के अनुभाग अधिकारी से मांगी गई सूचना के बारे में अपना पक्ष रखने को कहा गया। अधिष्ठान अनुभाग के अनुभाग अधिकारी द्वारा बताया गया कि बिन्दु संख्या 1 एवं 2 पर कार्यवाही की जा रही है जो गतिमान है। कार्यवाही पूर्ण होने पर अपीलकर्ता को सूचना उपलब्ध करा दी जायेगी । उल्लेखनीय है है कि श्री पाण्डे द्वारा 7 माह पूर्व लोक सूचना अधिकारी को प्रेषित उक्त आवेदन का लिफाफा पहले तो 15 मई को उन्हें इस टिप्पणी के साथ वापस मिला कि विभाग का नाम अवश्य लिखें ,पता अपूर्ण है। श्री पाण्डे ने वापस प्राप्त इस लिफाफे को यथावत राज्य सूचना आयोग को भेजते हुए उनसे सूचना दिलाने का आग्रह किया था और आयोग के अनुसचिव/ लोक सूचना अधिकारी ने 6 जून को इसे विधान सभा के लोक सूचना अधिकारी को भेजकर सूचना उपलब्ध कराने के निर्देश दिए थे। विधान सभा के लोक सूचना अधिकारी ने सूचना का अधिकार अधिनियम की धारा 5(4) एवं 5(5) के तहत सूचना उपलब्ध कराने हेतु पत्रवली संख्या 38 विधान सभा के अधिष्ठान अनुभाग को सन्दर्भित की गई थी। 30 दिन व्यतीत होने के बाद भी सूचना नहीं देने पर अधिष्ठान अनुभाग के अनुभाग अधिकारी को 14 जुलाई को पहला अनुस्मारक भेजा गया जिसकी प्रति श्री पाण्डे को भी की गई। इसके बाद अधिष्ठान अनुभाग को क्रमशः 4 अगस्त को दूसरा, 29 अगस्त को तीसरा और 19 सितम्बर को चौथा अनुस्मारक भेजा गया। मामले में पाण्डे ने कहा है कि वह सत्य की लड़ाई जारी रखेंगे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

निर्भीक पत्रकारिता में अग्रणीय पिघलता हिमालय के बढ़ते कदमों के साथ-

जनहित को समर्पित
सीमान्त के लोकप्रिय विधायक

हरीश धामी

धारचूला-मुनस्यारी विधानसभा

समाज हित में जितनी दूर तक दृष्टि पड़े, हमेशा आगे रहूँगा।

-हरीश धामी

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स
बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर
घर का सा
होटल
लक्ष्य इन
मदकोट
सम्पर्क
735285555

पूर्ण कालिक
संगीत प्रशिक्षण
केन्द्र
हिमालय संगीत
शोध समिति
जे.के.पुरम्, सेक्टर डी
छोटी मुखानी
हल्द्वानी
सम्पर्क- 9411563413

MARTOLIA
FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते- जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)